REVIEW OF RESEARCH
IMPACT FACTOR : 5.2331(UIF) UGC APPROVED JOURNAL NO. 48514 ISSN: 2249-894X
VOLUME - 7 | ISSUE - 8 | MAY - 2018

''विभिन्न प्रबंधन के विद्यालयों के शिक्षकों की कार्य संतुष्टि एवं क्लांतता के मध्य परस्पर सम्बन्धों का विद्यालय वातावरण पर प्रभाव का अध्ययन।''

कुमारी कविता दवे[1] , डॉ. जी. एस. मिश्रा[2]
[1]वरिष्ठ अध्यापक शासकीय उच्चतर माध्यमिक विद्यालय, पौड़ीकला, जबलपुर (म.प्र.)
[2] सेवानिवृत्त प्राचार्य, शासकीय शिक्षा महाविद्यालय, जबलपुर (म.प्र.)

सारांश–

प्रस्तुत शोधपत्र का मुख्य उद्देश्य विभिन्न प्रबंधन के विद्यालयों के शिक्षकों की कार्य संतुष्टि एवं क्लांतता के मध्य परस्पर संबंधों का विद्यालय वातावरण पर प्रभाव का अध्ययन करना हैं। इस उद्देश्य की प्राप्ति हेतु विवरणात्मक सर्वेक्षण विधि का प्रयोग किया गया है। कार्य संतुष्टि के मापन हेतु प्रमोद कुमार, डी. एन.मूथा एवं डॉ. रामजी श्रीवास्तव की मापनी एवं क्लांतता के मापन हेतु मैशलॉक मापनी तथा विद्यालय वातावरण मापनी डॉ. के. एस. मिश्रा द्वारा निर्मित मापनी का प्रयोग यादृच्छिक विधि से चयनित 600 शिक्षक एवं 800 विद्यार्थियों पर प्रशासित किया गया। परिणामों से ज्ञात होता है कि विद्यालयीन वातावरण पर शाला प्रबंधन की प्रकृति एवं कार्य संतुष्टि और क्लांतता के मध्य परस्पर संबंधों का सार्थक प्रभाव पड़ता है। शासकीय विद्यालय के शिक्षकों एवं शिक्षिकाओं का विद्यालयीन वातावरण पर अधिक सकारात्मक प्रभाव पड़ता है।

प्रस्तावना–

शिक्षा अपने चारों ओर की चीजों को सीखने की एक प्रक्रिया है। यह हमे किसी भी वस्तु या परिस्थिति को आसानी से समझने, किसी भी तरह की समस्या से निपटने और पूरे जीवनभर विभिन्न आयामों में संतुलन बनाए रखने में मदद करती हैं। शिक्षा सभी मनुष्यों का सबसे पहला और सबसे आवश्यक अधिकार है। बिना शिक्षा के हम अधूरे है। शिक्षा हमें अपने जीवन में एक लक्ष्य निर्धारित करने और आगे बढ़ने के लिए प्रेरित करती है। यह हमारे ज्ञान, कुशलता, आत्मविश्वास और व्यक्तित्व का विकास करती है। यह हमारे जीवन में दूसरों से बात करने की बौद्धिक क्षमता को बढ़ाती है। शिक्षा परिपक्वता लाती है और समाज के बदलते परिवेश में रहना सिखाती है यह सामाजिक विकास, आर्थिक वृद्धि और तकनीकी उन्नति का रास्ता है। शिक्षा एक व्यक्ति को अपनी क्षमता का पता लगाने में मदद करती हैं जो बदले में एक मजबूत और एकजुट समाज को बढ़ावा देती है।

शिक्षा प्राप्त करने का सबसे महत्वपूर्ण माध्यम शिक्षक है। एक विद्यार्थी के जीवन में शिक्षक एक ऐसा महत्वपूर्ण व्यक्ति होता है जो अपने ज्ञान, धैर्य, प्यार और देख –भाल से उसके पूरे जीवन को एक मजबूत आकार देता हैं।

वर्तमान समय में उन्नत ज्ञान–विज्ञान की अवस्था में जहाँ भू–मण्डलीकरण के कारण संपूर्ण विश्व एक गांव में बदल रहा है। ऐसे में शिक्षकों की जिम्मेदारी और अधिक बढ़ गई है। यदि शिक्षक उत्कृष्ट होगे तो आने वाली पीढ़ी को उचित मार्गदर्शन प्रदान कर सकेगे। अतः इसके लिए आवश्यक है कि शिक्षकों में कार्य संतुष्टि हो जिसमें उनकी क्षमता में वृद्धि हो सके। यदि शिक्षक अपने कार्य से संतुष्ट नहीं होगा तो वो पूर्ण क्षमता, उत्साह, निष्ठा, ईमानदारी के साथ अध्ययन कार्य नहीं कर पाएगा।

वर्तमान समय में शिक्षक की कल्पना चिंतन करने के बजाय, चिंतित रहने वाले एक मनुष्य के रूप में की जा सकती हैं। शासकीय अथवा अशासकीय विद्यालयों के शिक्षकों पर लगातार कार्य का दबाव बढ़ता जा रहा हैं जिससे उसे अपना कार्य करने में विभिन्न प्रकार की समस्याओं का सामना करना पड़ता हैं। यदि यही स्थिति लगातार बनी रहती है तो वह क्लांत हो जाता हैं। अर्थात् संवेगात्मक रूप से बहुत थक जाता हैं। यदि शिक्षक अपने कार्य से संतुष्ट रहेगा तो वह विद्यार्थियों को उचित मार्गदर्शन प्रदान कर सकेगा तथा वह विद्यार्थियों के बहुआयामी विकास के लिए शैक्षिक विकास के अलावा उसका नैतिक, मानसिक, चारित्रिक, आध्यात्मिक विकास करता हैं। अत' इससे विद्यार्थियों के व्यक्तित्व का सकारात्मक विकास होगा एवं विद्यालय का वातावरण उत्कृष्ट बनेगा।

नागर कोमल (2012) ने बताया क्लांतता से ग्रसित शिक्षक सफलतापूर्वक काम नहीं कर सकते हैं जैसा उनके विद्यार्थी चाहते थे। ब्रेकिट ए मार्क, पेलीमेरा रेकिल, मोसा–काजा जस्टीना, रेस रेगिना मारिया और सालोवे पीटर (2010) ने बताया उच्च कार्य संतुष्टि होने पर क्लांतता निम्न होती है। शेनवे एल जैमी, ईविंग सी जॉन, विविंगटन सूजी एम (2008) ने क्लांतता व कार्य संतुष्टि का अध्ययन किया।

एसफन डियारी, राजब एवं कमली मेहदी (2016) ने कार्य संतुष्टि एवं क्लांतता में नकारात्मक सहसंबंध बताया। मुखोपाध्याय दिलीप कुमार (1988) ने बताया कि विद्यालय वातावरण शैक्षणिक उपलबिध पर शिक्षकों की कार्य संतुष्टि का सार्थक योगदान रहता है। फिलाइस किलवेक (2016) ने बताया शिक्षकों की कार्य संतुष्टि का विद्यालय वातावरण पर सार्थक प्रभाव पड़ता है।

वर्तमान में जिस तीव्र गति से हमारी शिक्षा पद्धति, सामाजिक वातावरण एवं नैतिक मूल्यों में परिवर्तन हो रहे हैं उस स्थिति में ज्ञात किया जाए कि शिक्षक अपने कार्य से कितने संतुष्ट एवं कितने तनाव ग्रस्त हैं जिसका प्रभाव विद्यालय के वातावरण पर पड़ता है। अतः शोधकर्ता ने यह जानने का प्रयास किया कि शिक्षकों की कार्य संतुष्टि एवं क्लांतता का विद्यालय वातावरण पर क्या प्रभाव पड़ता है।

उद्देश्य–

विभिन्न प्रबंधन के विद्यालयों के शिक्षकों एवं शिक्षिकाओं की कार्य संतुष्टि एवं क्लांतता के मध्य परस्पर सम्बन्धों का विद्यालय वातावरण पर प्रभाव का अध्ययन करना।

परिकल्पना–

1. शासकीय एवं अशासकीय विद्यालय के शिक्षकों एवं शिक्षिकाओं की कार्य संतुष्टि एवं क्लांतता के मध्य परस्पर सम्बन्धों का विद्यालय वातावरण पर कोई सार्थक प्रभाव नहीं पड़ता है।

चर–

स्वतंत्र चर – (i) कार्य संतुष्टि
(ii) क्लांतता
(iii) प्रबन्धन

परतंत्र चर – (i) विद्यालय वातावरण

नियंत्रित चर –(i) कम से कम पांच वर्ष का शैक्षणिक अनुभव

विधि –न्यादर्श में चयनित शिक्षकों और शिक्षिकाओं को कार्य संतुष्टि एवं क्लांतता मापनी प्रशासित की गई तत्पश्चात् उनका फलांकन करके उच्च एवं निम्न श्रेणी में वर्गीकरण किया वर्गीकृत शिक्षकों के चयनित विद्यार्थियों पर विद्यालय वातावरण मापनी प्रशासित की गई। तत्पश्चात् फलांकन करके सांख्यिकी का उपयोग करके परिणामों का विश्लेषण एवं व्याख्या करके निष्कर्ष प्राप्त किए।

न्यादर्श–

शोध कार्य में जबलपुर जिले के शहरी एवं ग्रामीण क्षेत्रों के शासकीय एवं अशासकीय विद्यालयों के 600 शिक्षक–शिक्षिकाएँ एवं 800 विद्यार्थियों का यादृच्छिक विधि द्वारा चयन किया गया।

उपकरण–

(i) **कार्य संतुष्टि मापनी**–प्रमोद कुमार एवं डी. एन. मूथा

(ii) **क्लांतता मापनी**–मैश्लॉक

(iii) **विद्यालय वातावरण** – डॉ. करूणा शंकर मिश्रा

परिणामों का विश्लेषण एवं व्याख्या–

इन्हें निम्न तालिकाओं में प्रस्तुत किया गया है–

तालिका क्रमांक–01

विभिन्न प्रबंधन के विद्यालयों के शिक्षकों की कार्य संतुष्टि एवं क्लांतता के मध्य परस्पर संबंधों का विद्यालय वातावरण पर प्रभाव का अध्ययन

विद्यालय का प्रकार	समूह	संख्या	मध्यमान	मानक विचलन
शासकीय	उच्च कार्य संतुष्टि/उच्च क्लांतता	40	178.85	11.00
	उच्च कार्य संतुष्टि/निम्न क्लांतता	40	175.10	21.38
	निम्न कार्य संतुष्टि/उच्च क्लांतता	40	179.80	14.99
	निम्न कार्य संतुष्टि/निम्न क्लांतता	40	183.43	21.31
अशासकीय	उच्च कार्य संतुष्टि/उच्च क्लांतता	40	160.23	20.93
	उच्च कार्य संतुष्टि/निम्न क्लांतता	40	166.78	8.87
	निम्न कार्य संतुष्टि/उच्च क्लांतता	40	149.70	20.13
	निम्न कार्य संतुष्टि/निम्न क्लांतता	40	155.25	9.25

प्रसरण विश्लेषण सारांश तालिका

प्रसरण के स्रोत	स्वतंत्रता के अंश	वर्गों का योग	मध्यमान वर्ग	'एफ' अनुपात	'पी' मान
समूहों के मध्य	7	44056.95	6293.85	22.23	<0.01
समूहों के बीच	312	88320.72	283.08		

स्वतंत्रता के अंश – 7, 312 0.05 स्तर पर सार्थकता हेतु मान – 2.03

0.01 स्तर पर सार्थकता हेतु मान – 2.69

तालिका क्रमांक 1 में शासकीय एवं अशासकीय विद्यालयों के शिक्षकों की कार्य संतुष्टि एवं क्लांतता के मध्य पस्पर संबंधों का विद्यार्थियों के दृष्टिकोण से विद्यालयीन वातावरण पर प्रभाव संबंधी तालिका से स्पष्ट है कि दोनों समूह (शासकीय एवं अशासकीय) के मध्य सांख्यिकीय दृष्टिकोण से सार्थक अंतर है प्राप्त 'एफ' अनुपात का मान 22. 23 हैं जो 0.01 सार्थकता स्तर पर सार्थक हैं। शासकीय विद्यालय के शिक्षकों की निम्न कार्य संतुष्टि एवं निम्न क्लांतता का विद्यालयीन वातावरण पर प्रत्यक्षीकरण सबसे अच्छा हैं। जबकि अशासकीय विद्यालयों के शिक्षकों की निम्न कार्य संतुष्टि एवं उच्च क्लांतता का विद्यालय वातावरण पर प्रत्यक्षीकरण सबसे कम हैं।

उपरोक्त परिणामों के परिप्रेक्ष्य में निष्कर्ष स्वरूप कहा जा सकता है कि विद्यालय वातावरण पर शाला प्रबंधन की प्रकृति एवं कार्य संतुष्टि और क्लांतता के मध्य परस्पर संबंधों का सार्थक प्रभाव पड़ता है।

तालिका क्रमांक–02
विभिन्न प्रबंधन के विद्यालयों के शिक्षिकाओं की कार्य संतुष्टि एवं क्लांतता के मध्य परस्पर संबंधों का विद्यालय वातावरण पर प्रभाव का अध्ययन

विद्यालय का प्रकार	समूह	संख्या	मध्यमान	मानक विचलन
शासकीय	उच्च कार्य संतुष्टि/उच्च क्लांतता	40	178.83	9.01
	उच्च कार्य संतुष्टि/निम्न क्लांतता	40	154.95	20.48
	निम्न कार्य संतुष्टि/उच्च क्लांतता	40	171.55	25.83
	निम्न कार्य संतुष्टि/निम्न क्लांतता	40	171.15	18.75
अशासकीय	उच्च कार्य संतुष्टि/उच्च क्लांतता	40	167.88	13.41
	उच्च कार्य संतुष्टि/निम्न क्लांतता	40	160.23	18.42
	निम्न कार्य संतुष्टि/उच्च क्लांतता	40	141.20	10.26
	निम्न कार्य संतुष्टि/निम्न क्लांतता	40	149.05	11.52

प्रसरण विश्लेषण सारांश तालिका

प्रसरण के स्रोत	स्वतंत्रता के अंश	वर्गों का योग	मध्यमान वर्ग	'एफ' अनुपात	'पी' मान
समूहों के मध्य	7	45821.77	6545.97	23.00	<0.01
समूहों के बीच	312	88780.32	284.55		

स्वतंत्रता के अंश – 7, 312 0.05 स्तर पर सार्थकता हेतु मान – 2.03

0.01 स्तर पर सार्थकता हेतु मान – 2.69

तालिका क्रमांक 2 से स्पष्ट है कि शासकीय एवं अशासकीय विद्यालयों के शिक्षिकाओं की कार्य संतुष्टि एवं क्लांतता के मध्य परस्पर संबंधों का विद्यार्थियों के दृष्टिोण से विद्यालयीन वातावरण पर प्रभाव संबंधी सारणी से स्पष्ट है कि दोनों समूह (शासकीय एवं अशासकीय) के मध्य सांख्यिकी दृष्टिकोण से सार्थक अंतर है प्राप्त 'एफ' अनुपात का मान 23.00 हैं जो 0.01 सार्थकता स्तर पर सार्थक है। शासकीय विद्यालयों के शिक्षिकाओं के उच्च कार्य संतुष्टि एवं उच्च क्लांतता वाले समूह का विद्यालयीन वातावरण पर प्रत्यक्षीकरण सबसे अधिक अच्छा है। जबकि अशासकीय विद्यालयों की शिक्षिकाओं के निम्न कार्य संतुष्टि एवं उच्च क्लांतता वाले समूह का विद्यालयीन वातावरण पर प्रत्यक्षीकरण सबसे कम अच्छा हैं।

उपरोक्त परिणामों के परिप्रेक्ष्य में निष्कर्ष स्वरूप कहा जा सकता है कि विद्यालयीन वातावरण पर शाला प्रबंधन की प्रकृति एवं कार्य संतुष्टि एवं क्लांतता के मध्य परस्पर संबंधों का प्रभाव पड़ता है।

उपरोक्त तालिकाओं से स्पष्ट है कि शासकीय विद्यालयों के शिक्षक–शिक्षिकाओं के समूह में यद्यपि कार्य संतुष्टि का स्तर निम्न है परंतु क्लांतता का स्तर भी निम्न है अर्थात् वे तनावग्रस्त नहीं है जिससे विद्यार्थियों की अपनी अधिकतम संभावित योग्यता के साथ विद्यार्थियों को शिक्षित कर रहे है तथा विद्यालय वातावरण को उत्कृष्ट बनाने के लिए हर संभव प्रयास कर रहे है। जबकि अशासकीय विद्यालय के शिक्षकों की निम्न कार्य संतुष्टि व उच्च क्लांतता है अशासकीय विद्यालय के शिक्षकों पर कार्य का दबाव अधिक है तथा वेतन अन्य सुविधाएँ कम है जिसके कारण वे लगातार तनावग्रस्त रहते हैं। और विद्यालय वातावरण पर न्यूनतम सकारात्मक प्रभाव डालते है।

सिगिलस निकालस, जेचोपोलू, इरीडिकी, ग्रेमाटीका पोलस वैश्रीलियस (2006), शैनवे एल जेमी, ईविग सी जॉन, विविगटन सूजी एम (2008) ने कार्य संतुष्टि व क्लांतता में नकारात्मक सहसंबंध बताया है।

निष्कर्ष–

शासकीय एवं अशासकीय विद्यालय के शिक्षकों एवं शिक्षिकाओं की कार्य संतुष्टि एवं क्लांतता के मध्य परस्पर सम्बन्धों का विद्यालयीन वातावरण पर सार्थक प्रभाव पड़ता है।

सन्दर्भ–

अस्थाना मधु, वर्मा किरनवाला (2012) ***व्यक्तित्व मनोविज्ञान***, दिल्ली मोतीलाल बनारसीदास, तृतीय संस्करण, पृ. संख्या 104–109

Brackett A, Marc, Palomera Requel, Maisa-Kaja Justyna, Reyes Regina Maria and Salovey Peter (2010) "Emotion-Regulation Ability, Burnout and Job Satisfaction Among British Secondary School Teachers", Psychology in the Schools Vol. 47(4).

Chenevey L Jamie, Ewing C. John, Whitlinglon M. Surie (2008) " Teacher Burnout and Job Satisfaction among Agricultural Education Teacher" Journal of Agricultural Education Vol. 49.

Esfandiani Raiab, Kamali Mahdi (2016) "On the Relationship between job satisfaction, Teacher Burnout and Teacher Autonomy", Iranian Journal of Applied Language Studies Vol. 8.

कपिल डॉ. एच. के. एवं सिंह ममता (2012) ***सांख्यिकी के मूल तत्व***, आगरा, अग्रवाल पब्लिकेशन्स, तृतीय संस्करण, पृ. संख्या 93–95, 162–175, 419–455

मुखोपाध्याय, दिलीप कुमार (1988) ''माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों के विद्यालयीन परिवेश की शैक्षिक उपलब्धि पर व्यक्तित्व विशेष्ताओं के विकास पर प्रभाव का अध्ययन'' फिफ्थ सर्वे ऑफ रिसर्च एजुकेशन, पृ.सं. 1888

Nagar Komal (2012) "Organizational Commitment and Job Satisfaction among Teacher during Times of Burout" , Vikalpa Vol. 37.

Tsigilies Nikolaos, Zachopoulou Evridiki and Grammatikopoulos Varilios (2006) "Job Satisfaction and burnout among Greek early educators : A comparison between public and private sector employees" Educational research and Review Vol. 1(8) pp 256-261.

कुमारी कविता दवे
वरिष्ठ अध्यापक शासकीय उच्चतर माध्यमिक विद्यालय, पौड़ीकला, जबलपुर (म.प्र.)